

सम्पादकीय

दिल्ली की आग: हादसे नहीं, सुरक्षा व्यवस्था के लिए चेतावनी

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

राजधानी दिल्ली में रविवार को कुछ ही घंटों के अंतराल में आग की दो बड़ी घटनाओं ने एक बार फिर महानगर की अग्नि सुरक्षा व्यवस्था, अनियोजित शहरी विस्तार और आवासीय इलाकों में चल रही व्यावसायिक गतिविधियों पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। उत्तर–पश्चिम दिल्ली के स्वरूप नगर में एक फ़ैक्ट्री–कम–गोदाम में आग लगने के बाद पड़ोसी इमारत में अफरा–तफरी मच गई और छह लोगों, जिनमें महिलाएं और बच्चे भी शामिल थे, ने घबराहट में इमारत से छलांग लगा दी। सभी घायलों को अस्पताल ले जाया गया और उनकी हालत खतरे से बाहर बताई गई।

दमकल विभाग ने आग बुझाने के लिए 15 दमकल वाहनों को भेजा। इसी दिन पूर्वी दिल्ली के दल्लुपुरा क्षेत्र में लकड़ी के सामान वाले एक गोदाम में आग लग गई। दमकल विभाग के अनुसार मौके पर 16 दमकल वाहन भेजे गए और एक अग्निशमन अधिकारी धुएं के संपर्क में आने के बाद अस्पताल में भर्ती कराया गया। आग लगने के कारणों की जांच की जा रही है।

दोनों घटनाओं का तत्काल कारण जांच के बाद स्पष्ट होगा, इसलिए बिना जांच किसी व्यक्ति, संस्था या विभाग को दोषी ठहराना उचित नहीं होगा। लेकिन इन घटनाओं ने एक बड़ा और पुराना प्रश्न जरूर सामने रख दिया है क्या दिल्ली जैसे महानगर में आग लगने के बाद प्रतिक्रिया देने की व्यवस्था पर्याप्त है, या आग लगने से पहले जोखिम रोकने की व्यवस्था को अधिक मजबूत करने की आवश्यकता है? आग बुझाना ही अग्नि सुरक्षा नहीं आमतौर पर किसी आग की घटना के बाद चर्चा दमकल वाहनों की संख्या, आग बुझाने में लगे समय और राहत का तत्क सीमित रह जाती है। यह आवश्यक है, लेकिन अग्नि सुरक्षा का अर्थ केवल आग लगने के बाद दमकल पहुंचना नहीं है। वास्तविक अग्नि सुरक्षा की शुरुआत उस समय होती है जब कोई भवन बनाया जाता है। भवन का उपयोग किस उद्देश्य से होगा, वहां कितने लोग रहेंगे या काम करेंगे, ज्वलनशील सामग्री कितनी होगी, आपातकालीन निकास कहां होगा, अग्निशमन उपकरण उपलब्ध हैं या नहीं और दमकल वाहनों के पहुंचने के लिए पर्याप्त रास्ता है या नहीं इन सभी सवालों का जवाब भवन के निर्माण और संचालन के स्तर पर होना चाहिए। यदि आवासीय भवन के आसपास ऐसे गोदाम या कारखाने संचालित हों जहां कचड़ा, रेक्सिन, लकड़ी, रसायन या अन्य ज्वलनशील सामग्री रखी जाती हो, तो जोखिम स्वाभाविक रूप से बढ़ जाता है। स्वरूप नगर की पड़ोसी इमारत में लगी, लेकिन उसके कारण उत्पन्न भय ने दूसरी इमारत के लोगों को भी जोखिम उठाने पर मजबूर किया।

यह घटना हमें आपदा प्रबंधन की एक महत्वपूर्ण कमी की ओर ध्यान दिलाती है। आम नागरिकों को यह जानकारी कितनी है कि आग लगने की स्थिति में क्या करना चाहिए? क्या हर स्कूल, बाजार, कारखाने और बहुमंजिला इमारत में नियमित निकासी अभ्यास होता है? क्या लोगों को आपातकालीन सीढ़ियों और निकास द्वार की जानकारी होती है? इन सवालों के जवाब केवल प्रशासन को नहीं, बल्कि भवन संचालकों और नागरिक समाज को भी देने होंगे। दिल्ली की बसावट पर फिर सवाल दिल्ली का बड़ा हिस्सा तेजी से विकसित हुआ है। कई इलाकों में आवासीय, व्यावसायिक और औद्योगिक गतिविधियां एक–दूसरे के बेहद करीब दिखाई देती हैं। घनी आबादी वाली गलियों में यदि गोदाम और छोटे कारखाने संचालित हों, तो किसी दुर्घटना की स्थिति में दमकल वाहनों की आवाजाही भी चुनौती बन सकती है। इसलिए शहरी नियोजन को केवल नई सड़कें, प्लाईओवर और इमारतें बनाने तक सीमित नहीं रखा जा सकता। शहर सुरक्षित भी होना चाहिए। मास्टर प्लान, भवन उपयोग, अग्नि सुरक्षा मानक, पार्किंग, आपातकालीन मार्ग और अवैध निर्माण की निगरानीकृये सभी एक ही शहरी सुरक्षा व्यवस्था के हिस्से हैं। दिल्ली में हाल के भवन सुरक्षा मामलों के बाद नगर निगम द्वारा भवन योजनाओं, अधिभोग सीमा, मास्टर प्लान के अनुपालन, अग्निशमन अनापत्ति प्रमाणपत्र और संरचनात्मक स्थिरता जैसे पहलुओं की जांच पर जोर दिया गया है। यह स्वागत योग्य कदम है, लेकिन ऐसी कार्रवाई किसी दुर्घटना के बाद ही क्यों तेज हो? सुरक्षा जांच नियमित होनी चाहिए, प्रतिक्रियात्मक नहीं। दमकल विभाग की क्षमता और चुनौती आग लगने पर सबसे पहले जिस विभाग पर नजर जाती है, वह दमकल सेवा है। लेकिन अग्निशमन कर्मियों की भूमिका अत्यंत जोखिमपूर्ण होती है। दल्लुपुरा की घटना में भी एक दमकल अधिकारी धुएं के संपर्क में आने के बाद अस्पताल पहुंचा। दमकल सेवाओं को आधुनिक उपकरण, पर्याप्त मानव संसाधन, प्रशिक्षण और सुरक्षित कार्य परिस्थितियां देना सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिए। साथ ही पुराने और घनी आबादी वाले क्षेत्रों के लिए छोटे आकार के तेज प्रतिक्रिया वाहन, बेहतर हाइड्रेंट नेटवर्क और स्थानीय स्तर पर त्वरित प्रतिक्रिया प्रणाली विकसित करने पर विचार आवश्यक है। यह भी सुनिश्चित होना चाहिए कि दमकल विभाग को किसी भवन की संरचना, अंदर मौजूद सामग्री और संभावित जोखिम की पर्याप्त जानकारी समय रहते उपलब्ध हो। जिम्मेदारी केवल सरकार की नहीं अग्नि सुरक्षा को केवल सरकारी विभाग की जिम्मेदारी मानना भी सही नहीं होगा। भवन मालिक, कारखाना संचालक, व्यापारी, कर्मचारी और आम नागरिकसभी की भूमिका है। व्यावसायिक प्रतिष्ठानों को अग्निशमन उपकरणों की नियमित जांच करनी चाहिए। आपातकालीन निकास को सामान रखकर बंद नहीं किया जाना चाहिए। बिजली के तारों और उपकरणों का समय–समय पर निरीक्षण होना चाहिए। ज्वलनशील पदार्थों के भंडारण के लिए निर्धारित सुरक्षा नियमों का पालन किया जाना चाहिए। इसी प्रकार नागरिकों को भी किसी भवन में प्रवेश करते समय यह देखना चाहिए कि आपातकालीन निकास कहां है। बच्चों और बुजुर्गों को आगे किसी स्थिति में सुरक्षित निकासी की बुनियादी जानकारी देना भी जरूरी है। हादसे के बाद जांच से आगे बढ़ना होगा आग की हर बड़ी घटना के बाद जांच बैठती है। रिपोर्ट आती है। कुछ समय तक सुरक्षा अभियान भी चलता है और फिर व्यवस्था सामान्य हो जाती है। यही चक्र सबसे बड़ी समस्या है। जरूरत इस बात की है कि जांच रिपोर्ट केवल कागज़ों तक सीमित न रहे। यदि किसी भवन में सुरक्षा नियमों का उल्लंघन पाया जाता है तो सुधार की समयसीमा तय हो। यदि कोई संरचना खतरनाक पाई जाती है तो कार्रवाई हो। यदि नियमों में कमी सामने आती है तो उन्हें बदला जाए। आग को रोकना नहीं जा सकता, लेकिन आग से होने वाली क्षति को बहुत हद तक कम किया जा सकता है। इसके लिए पूर्व तैयारी, नियमित निरीक्षण और नागरिक प्रशिक्षण सबसे प्रभावी साधन हैं। सम्पादकीय दृष्टिकोण दिल्ली में हुई आग की घटनाओं को केवल दो अलग–अलग हादसों के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा। इन घटनाओं से निकलने वाला बड़ा संदेश यह है कि महानगरों की विकास नीति में सुरक्षा को बुनियादी ढांचे का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाना चाहिए। राजधानी में ऊंची इमारतें, चौड़ी सड़कें और आधुनिक सुविधाएं जरूरी हैं, लेकिन उनके साथ सुरक्षित, सड़क निकासी मार्ग, प्रभावी अग्निशमन व्यवस्था और जिम्मेदार शहरी नियोजन भी उतना ही जरूरी है।

हिंदी दिवस: राजभाषा से जनभाषा तक, सम्मान के साथ अपनाने की जरूरत

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

14 सितंबर भारत के भाषाई इतिहास में एक महत्वपूर्ण दिन है। यही वह तारीख है, जब वर्ष 1949 में संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इसी ऐतिहासिक निर्णय की स्मृति में प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। लेकिन हिंदी दिवस केवल एक सरकारी आयोजन, भाषण, प्रतियोगिता या पुरस्कार तक सीमित रहने का अवसर नहीं है। यह उस बड़े सवाल पर विचार करने का दिन है कि स्वतंत्र भारत में हिंदी की वास्तविक स्थिति क्या है और आने वाले समय में उसे किस दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। हिंदी भारत की सबसे व्यापक रूप से समझी और बोली जाने वाली भाषाओं में शामिल है। इसका प्रभाव केवल हिंदी भाषी राज्यों तक सीमित नहीं है। देश के विभिन्न हिस्सों में रोजगार, व्यापार, शिक्षा, मीडिया, मनोरंजन और जनसंचार के माध्यम से हिंदी ने व्यापक संपर्क भाषा का रूप ग्रहण किया है। विदेशों में बसे भारतीय समुदायों के बीच भी हिंदी की उपस्थिति दिखाई देती है। फिर भी हिंदी के इतिहास को समझते समय एक महत्वपूर्ण संवैधानिक तथ्य स्पष्ट रखना जरूरी है। संविधान ने हिंदी को भारत की 'राष्ट्रभाषा' नहीं, बल्कि संघ की राजभाषा के रूप में मान्यता दी। संविधान के अनुच्छेद 343 में देवनागरी

गणेश से विकसित भारत तक: बुद्धि, विवेक और समृद्धि का संकल्प

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

भारतीय संस्कृति में भगवान गणेश केवल एक आराध्य देवता नहीं, बल्कि शुभारंभ, विवेक, ज्ञान, धैर्य और विघ्नों पर विजय के प्रतीक माने जाते हैं। किसी भी मंगल कार्य से पहले गणेश वंदना की परंपरा इस गहरे विश्वास को व्यक्त करती है कि किसी कार्य की सफलता के लिए केवल संसाधन पर्याप्त नहीं, बल्कि सही सोच, विवेकपूर्ण निर्णय और निरंतर प्रयास भी आवश्यक हैं। यही कारण है कि गणेशोत्सव धार्मिक आस्था के साथ–साथ सामाजिक केना, सामूहिक सहभागिता और सांस्कृतिक एकता का भी अवसर बन गया है। आज जब भारत विकसित राष्ट्र बनने के लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रहा है, तब भगवान गणेश की प्रतीकात्मक शिक्षाओं को आधुनिक विकास की दृष्टि से देखना प्रासंगिक हो जाता है। विकसित भारत केवल ऊंची आर्थिक विकास दर, आधुनिक इमारतों, डिजिटल तकनीक और बड़े बुनियादी ढांचे का नाम नहीं है। विकसित भारत का वास्तविक अर्थ ऐसा समाज है, जहां आर्थिक प्रगति के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सामाजिक न्याय, पर्यावरण संरक्षण, सुरासन और नागरिक जिम्मेदारी को भी समान महत्व मिले। विघ्नहर्ता की अवधारणा और आधुनिक भारत भगवान गणेश को विघ्नहर्ता कहा जाता है। इसका अर्थ यह नहीं कि जीवन में आने वाली प्रत्येक कठिनाई चमत्कारिक रूप से समाप्त हो जाएगी। भारतीय दर्शन

महंगाई की नई चुनौती: विकास की रफ्तार के साथ जेब का संतुलन भी जरूरी

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

भारत की अर्थव्यवस्था इस समय एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है, जहां एक ओर तेज आर्थिक विकास की उम्मीदें हैं, वहीं दूसरी ओर थोक महंगाई के आंकड़े नई चिंता का संकेत दे रहे हैं। अगस्त 2026 में भारत की थोक मूल्य महंगाई दर बढ़कर 9.92 प्रतिशत हो गई, जो जुलाई में 9.78 प्रतिशत थी। ईंधन और बिजली की कीमतों में तेज बढ़ोतरी तथा खाद्य और विनिर्मित वस्तुओं की महंगाई ने इस दबाव को बढ़ाया है।

यह आंकड़ा केवल अर्थशास्त्रियों या नीति–निर्माताओं की चिंता का विषय नहीं है। महंगाई का असर अंततः आम नागरिक के घरेलू बजट, छोटे कारोबार की लागत, उद्योगों के उत्पादन खर्च और सरकार की आर्थिक सहायता के रूप में महंगाई पर प्रभावी नियंत्रण संभव

संपादकीय

हिंदी दिवस: राजभाषा से जनभाषा तक, सम्मान के साथ अपनाने की जरूरत

रखना भी उतना ही जरूरी है। 14 सितंबर और हिंदी दिवस की परंपरा 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। बाद में हिंदी के प्रचार–प्रसार और राजभाषा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाने की परंपरा विकसित हुई। सामान्यतः वर्ष 1953 से हिंदी दिवस के आयोजन का उल्लेख मिलता है। यह परंपरा हमें इतिहास की उस यात्रा की याद दिलाती है, जिसमें हिंदी ने साहित्य और जनसंचार से लेकर प्रशासन और आधुनिक तकनीक तक अपनी जगह बनाई है। महात्मा गांधी हिंदी को व्यापक जनसंपर्क की भाषा के रूप में देखते थे। उनका मानना था कि देश में ऐसी भाषा का विकास होना चाहिए, जिसे सामान्य लोग आसानी से समझ सकें। गांधीजी का भाषा संबंधी दृ ष्टिकोण केवल हिंदी के विस्तार और सीमित नहीं था, बल्कि भारतीय भाषाओं के सम्मान और आम जनता तक संवाद पहुंचाने से भी जुड़ा था। हिंदी की असली ताकत उसकी सरलता और स्वीकार्यता हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति उसकी व्यापक सामाजिक स्वीकार्यता है। बाजार से लेकर सिनेमा तक, टेलीविजन से लेकर डिजिटल मीडिया तक और समाचार पत्रों से लेकर सामाजिक मंचों तक हिंदी ने अपना प्रभाव स्थापित किया है। आज मोबाइल फोन और इंटरनेट ने हिंदी को नई गति दी है। यूनिकोड और

गणेश से विकसित भारत तक: बुद्धि, विवेक और समृद्धि का संकल्प

छवि हमें यह याद दिलाती है कि ज्ञान का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत सफलता नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी योगदान भी होना चाहिए। बड़े कान और सुनने की संस्कृति भगवान गणेश के बड़े कानों को ध्यानपूर्वक सुनने का प्रतीक माना जाता है। लोकतंत्र में यह गुण अत्यंत महत्वपूर्ण है। शासन व्यवस्था तभी प्रभावी हो सकती है जब वह नागरिकों की वास्तविक समस्याओं को सुनी और समझे। किसान की समस्या, छोटे व्यापारी की चिंता, श्रमिक की आवश्यकता, युवाओं की रोजगार आकांक्षा, महिलाओं की सुरक्षा और वरिष्ठ नागरिकों की सुविधाएं ये सभी विकास के वास्तविक पहलू हैं। पैमाने हैं। विकसित भारत की कल्पना में जनभागीदारी को केंद्र में रखना होगा। केवल चुनावएं बनाना पर्याप्त नहीं है; यह भी देखना होगा कि वे जमीन पर किस तरह लागू हो रही हैं और उनका लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंच रहा है या नहीं। छोटी आंखें और एकाग्रता का संकेत है कि वे भविष्य की चुनौतियों को कितनी दूरदृष्टि से देखते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, अंतरिक्ष विज्ञान, सेमीकंडक्टर, हरित ऊर्जा और डिजिटल अर्थव्यवस्था जैसे क्षेत्र भारत के भविष्य को प्रभावित करने वाले हैं। ऐसे समय में युवाओं को केवल डिग्री देने के बजाय उच्च ज्ञान, कौशल, नवाचार और समस्या–समाधान की क्षमता से लैस करना जरूरी है। भगवान गणेश की बुद्धि और विवेक से जुड़ी सांस्कृतिक

महंगाई की नई चुनौती: विकास की रफ्तार के साथ जेब का संतुलन भी जरूरी

खानों में रखकर देखने के बजाय दोनों के बीच संतुलन को समझना जरूरी है। थोक महंगाई का संदेश क्या है? थोक मूल्य सूचकांक मुख्य रूप से उत्पादकों और कारोबारियों के स्तर पर कीमतों में होने वाले बदलाव को दर्शाता है। यह जरूरी नहीं कि थोक महंगाई में हुई हर वृद्धि तत्काल उसी अनुपात में खुदरा बाजार में दिखाई दे। लेकिन यदि उत्पादन लागत लंबे समय तक बढ़ी रहती है, तो उसका असर आम ग्राहक और उपभोक्ता कीमतों पर पड़ सकता है। अगस्त में ईंधन और बिजली से जुड़ी कीमतों में सालाना आधार पर लगभग 22.93 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस से जुड़े दामों में भी उल्लेखनीय बढ़ोतरी रही। खाद्य वस्तुओं की थोक महंगाई 7.06 प्रतिशत और विनिर्मित उत्पादों की कीमतों में वृद्धि 8.37 प्रतिशत रही।

इन आंकड़ों को हल्के में लेना

Bhaarataarth.com

हिंदी दिवस: राजभाषा से जनभाषा तक, सम्मान के साथ अपनाने की जरूरत

और संचार की भाषा के रूप में विकसित करते हुए क्षेत्रीय भाषाओं को समान सम्मान देना भारतीय संघवाद की भावना के अनुरूप होगा। राजभाषा की सफलता कागज से ज्यादा व्यवहार में हिंदी दिवस पर सरकारी कार्यालयों में कार्यक्रम आयोजित होते हैं, हिंदी में काम करने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है और विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। इन प्रयासों का अपना महत्व है, लेकिन राजभाषा की वास्तविक सफलता तब मानी जाएगी, जब नागरिक को सरकारी जगह से जोड़ सकता है। हिंदी को कठिन और अत्यधिक संस्कृ तनिष्ठ बनाने के बजाय सहज, आधुनिक और आम आदमी की समझ के अनुरूप रखना ही आवश्यक है। भाषा जितनी सरल होगी, उसका प्रभाव उतना व्यापक होगा। हिंदी और रोजगार का बदलता परिदृश्य आज हिंदी केवल साहित्य या पत्रकारिता की भाषा नहीं रही। डिजिटल मार्केटिंग, सामग्री निर्माण, अनुवाद, ऑनलाइन शिक्षा, ग्राहक सेवा, मनोरंजन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित सेवाओं में हिंदी का बाजार तेजी से विकसित हो रहा है। आने

गणेश से विकसित भारत तक: बुद्धि, विवेक और समृद्धि का संकल्प

आधारित आयोजन धार्मिक आस्था को कमजोर नहीं करते, बल्कि उसे अधिक जिम्मेदार बनाते हैं। यही वह क्षेत्र है जहां धार्मिक उत्सव सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बन सकते हैं। यदि लाखों लोग एक साथ स्वच्छता, जल संरक्षण और पर्यावरण का संकल्प लें, तो उसका प्रभाव किसी बड़े समृद्धि का अर्थ केवल धन नहीं भगवान गणेश को मंगल और समृद्धि से भी जोड़ा जाता है। लेकिन समृद्धि का अर्थ केवल व्यक्तिगत धन–संपत्ति नहीं हो सकता। एक ऐसा समाज जहां बच्चे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करें, युवाओं को रोजगार मिले, किसान सम्मानजनक आय अर्जित करें, उद्यमी को अवसर मिले और जरूरतमंद को सामाजिक सुरक्षा प्राप्त होकूवही व्यापक अर्थ में समृद्ध समाज कहलाएगा। भारत की आर्थिक शक्ति तेजी से बढ़ती है, उद्यमी विकास उसकी आधारशिला होगा। छोटे उद्यम, स्थानीय व्यवसाय, स्टार्टअप, महिला उद्यमिता, ग्रामीण अर्थव्यवस्था और कौशल आधारित रोजगार के प्रति जिम्मेदारी भी गणेशोत्सव का नई। छोटी आंखें और एकाग्रता का संकेत है कि वे भविष्य की चुनौतियों को कितनी दूरदृष्टि से देखते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, अंतरिक्ष विज्ञान, सेमीकंडक्टर, हरित ऊर्जा और डिजिटल अर्थव्यवस्था जैसे क्षेत्र भारत के भविष्य को प्रभावित करने वाले हैं। ऐसे समय में युवाओं को केवल डिग्री देने के बजाय उच्च ज्ञान, कौशल, नवाचार और समस्या–समाधान की क्षमता से लैस करना जरूरी है। भगवान गणेश की बुद्धि और विवेक से जुड़ी सांस्कृतिक

महंगाई की नई चुनौती: विकास की रफ्तार के साथ जेब का संतुलन भी जरूरी

रहना उससे कम जरूरी नहीं। ऊर्जा की लागत बढ़ने का असर परिवहन से लेकर विनिर्माण, कृषि, व्यापार और घरेलू उपभोग तक अनेक क्षेत्रों में पड़ता है। आम आदमी के लिए असली सवाल महंगाई का सबसे सीधा प्रभाव उस परिवार पर पड़ता है जिसकी आय सीमित है। उच्च आय वाले परिवार बढ़ती कीमतों का कुछ हिस्सा बचत या निवेश में बदलाव करके संभाल सकते हैं, लेकिन निम्न और मध्यम आय वर्ग के सामने विकल्प सीमित होते हैं। रसोई का बजट, बच्चों की शिक्षा, आवागमन, स्वास्थ्य खर्च, किराया और बिजली जैसे खर्च पहले से तय होते हैं। इनमें लगातार वृद्धि होने पर परिवार को या तो बचत कम करनी पड़ती है या गैर–जरूरी खर्चों में कटौती करनी पड़ती है। यही वह बिंदु है जहां आर्थिक विकास की गुणवत्ता की मांग बढ़ती पड़ी है। देश का ळक बढ़ना जरूरी है, लेकिन परिवार की क्रय शक्ति मजबूत

इसलिए नीति का केंद्र केवल महंगाई के आंकड़े कम करना नहीं, बल्कि आपूर्ति पक्ष को मजबूत करना होगा।

कृषि उत्पादन और भंडारण क्षमता बढ़ाना, खाद्य आपूर्ति श्रृंखला में बर्बादी कम करना, परिवहन लागत घटाना, ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोत बढ़ाना और आवश्यक वस्तुओं के बाजार की निगरानी मजबूत करना ऐसे कदम हैं

जिनका प्रभाव अपेक्षाकृत स्थायी हो सकता है।

कोर्ट में सरेंडर, अब 1100 साल की सजा का सामना करेंगे तरुण तेजपाल

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com
पणजी, 14 सितंबर 2026। 'तहलका' के पूर्व एडिटर-इन-चीफ तरुण तेजपाल ने सोमवार को गोवा के मापुसा कोर्ट के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। यह कार्रवाई 2013 के यौन उत्पीड़न मामले में बॉम्बे हाईकोर्ट की गोवा पीठ द्वारा सुनाई गई 10 वर्ष की कठोर कारावास की सजा के बाद सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के अनुपालन में की गई है। सरेंडर के बाद उन्हें जेल भेज दिया गया। मामला वर्ष 2013 में गोवा के एक होटल में 'तहलका' पत्रिका के कार्यक्रम के दौरान उनकी एक जूनियर महिला सहकर्मी से जुड़े यौन उत्पीड़न के आरोपों का है। हाईकोर्ट ने 6 अगस्त 2026 को निचली अदालत के 2021 के बरी करने के फैसले को पलटते हुए तेजपाल को दोषी ठहराया और 10

वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई थी। सुप्रीम कोर्ट ने सरेंडर से छूट की याचिका ठुकराई बॉम्बे



हाईकोर्ट के फैसले के खिलाफ तरुण तेजपाल ने सुप्रीम कोर्ट का रुख किया था। उन्होंने अपील पर सुनवाई होने तक आत्मसमर्पण से छूट देने का अनुरोध किया था। सुप्रीम कोर्ट ने यह राहत देने से इनकार करते हुए उन्हें निर्धारित अवधि के भीतर

आत्मसमर्पण कर दिया। इसके साथ ही हाईकोर्ट द्वारा सुनाई गई सजा के अमल की प्रक्रिया आगे बढ़ गई है। उनकी सुप्रीम कोर्ट में दायर अपील पर आगे की सुनवाई अब न्यायिक प्रक्रिया के अनुसार होगी। 2021 में निचली अदालत ने किया था बरी इस मामले में गोवा की अतिरिक्त सत्र अदालत ने मई 2021 में तेजपाल को आरोपों से बरी कर दिया था। निचली अदालत के फैसले के खिलाफ गोवा सरकार ने बॉम्बे हाईकोर्ट में अपील की। हाईकोर्ट ने मामले की दोबारा समीक्षा करते हुए निचली अदालत के फैसले को पलट दिया और तेजपाल को दोषी करार दिया। अदालत ने उन्हें दुर्कर्म तथा यौन उत्पीड़न से जुड़े प्रावधानों के तहत दोषी ठहराते हुए 10 वर्ष की कठोर कारावास की सजा सुनाई। गोवा सरकार ने मांगी है और कड़ी सजा मामले में गोवा सरकार ने भी

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

होसपेट, 14 सितंबर 2026। लोकदेवता श्री बाबा रामदेवजी की भक्ति और श्रद्धा से सराबोर 'एक शाम श्री बाबा रामदेवजी के नाम' भव्य भजन संख्या का रविवार रात श्रद्धापूर्वक समापन हुआ। के.एल.एस. कल्याण मंडप, विजया टॉकीज के समीप आयोजित कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने सपरिवार भाग लिया। भजनों की प्रस्तुतियों के दौरान पूरा परिवार बाबा रामदेवजी के जयकारों से गूंज उठा और श्रद्धालु देर रात तक भक्तिरस में डूबते रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ शाम 7:30 बजे भोजन प्रसादी से हुआ। इसके बाद रात 8 बजे भव्य जागरण एवं भजन संख्या शुरू हुई। राजस्थान से आए सुप्रसिद्ध लाला भाई गुप एंड पार्टी के साथ छोटा बच्चा आसनाबाद, अर्चन लुहार एवं रेखा परमार ने बाबा रामदेवजी के भजनों की प्रस्तुतियां दी। कलाकारों की भक्तिमय प्रस्तुतियों ने माहौल को आध्यात्मिक रंग में रंग दिया।

राजस्थान की वीरगाथाओं ने भरा जोश कार्यक्रम का मंच संचालन रणजीत माली मालावास ने किया। उन्होंने भजन संख्या के बीच राजस्थान के वीर क्षत्रियों की शौर्य, त्याग और पराक्रम से जुड़ी गाथाओं का प्रभावी वर्णन किया। वीर रस से अंतरेप्रत प्रसंगों पर श्रद्धालुओं ने तालियां और जयघोष के साथ उत्साह व्यक्त



किया। कांग्रेस महासचिव रानी संयुक्ता ने की सहभागिता कार्यक्रम में कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस कमेटी की महासचिव श्रीमती बी.एल. रानी संयुक्ता भी शामिल हुईं। उन्होंने आयोजकों एवं श्रद्धालुओं का उत्साह दी। कलाकारों की भक्तिमय प्रस्तुतियों ने माहौल को आध्यात्मिक रंग में रंग दिया।

नरपतसिंह मोहनबत्सिंहजी देवड़ा परिवार एवं बाबा रामदेवजी चौरिटेबल ट्रस्ट की ओर से श्रीमती बी.एल. रानी संयुक्ता का सम्मान किया गया। भजनों के दौरान श्रद्धालु बाबा रामदेवजी के जयकारे लगाते हुए भाव-विभोर दिखाई दिए। राजस्थान की लोकभक्ति, मारवाड़ी भजनों और वीरगाथाओं के संगम ने

कार्यक्रम को विशेष आकर्षण प्रदा किया। आयोजकों के अनुसार धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजन समाज को अपनी परंपराओं और लोक संस्कृति से जोड़ने के साथ सामाजिक एकता, भाईचारे और आपसी सद्भाव को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भव्य भजन संख्या एवं भोजन प्रसादी का आयोजन राजपूत श्री नरपतसिंह, सुपुत्र मोहनबत्सिंहजी देवड़ा की ओर से किया गया। आयोजकों ने कार्यक्रम में सहभागिता करने वाले सभी श्रद्धालुओं, सहयोगियों और समाजकुंडों के प्रति आभार व्यक्त किया। समाचार प्रकरक जबर्सिंह राजपुरोहित, होसपेट, कर्नाटक।

2028 में फिर कांग्रेस सरकार, डी.के. शिवकुमार बनेंगे मुख्यमंत्री: चालुवरायस्वामी

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com



नागमंगला, 14 सितंबर 2026। मांड्या जिले के नागमंगला तालुक स्थित कन्याघट्टा गांव में नवनिर्मित महागणपति मंदिर के उद्घाटन समारोह के दौरान जल संसाधन एवं मांड्या जिला प्रमारी मंत्री एन. चालुवरायस्वामी ने कर्नाटक की राजनीति को लेकर बड़ा बयान दिया। उन्होंने दावा किया कि वर्ष 2028 में कांग्रेस फिर से सत्ता में लौटेगी और डी.के. शिवकुमार दोबारा राज्य के मुख्यमंत्री बनेंगे। मंत्री चालुवरायस्वामी ने अपने संबोधन में कहा कि मुख्यमंत्री सिद्धारमैया के सहयोग से डी.के. शिवकुमार भविष्य में फिर मुख्यमंत्री पद संभालेंगे। उनका यह बयान ऐसे समय आया है, जब

कर्नाटक कांग्रेस में नेतृत्व और आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर राजनीतिक चर्चाएं लगातार बनी हुई हैं। सूखे को



लेकर केंद्र पर निशाना मंदिर के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए चालुवरायस्वामी ने राज्य में सूखे की स्थिति का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि किसानों को राहत और अनुदान उपलब्ध कराने के मुद्दे पर राज्य सरकार को केंद्र से संबंधित बड़ा बयान दिया। उन्होंने दावा किया कि वर्ष 2028 में कांग्रेस फिर से सत्ता में लौटेगी और डी.के. शिवकुमार दोबारा राज्य के मुख्यमंत्री बनेंगे। मंत्री चालुवरायस्वामी ने अपने संबोधन में कहा कि मुख्यमंत्री सिद्धारमैया के सहयोग से डी.के. शिवकुमार भविष्य में फिर मुख्यमंत्री पद संभालेंगे। उनका यह बयान ऐसे समय आया है, जब

हैं। इस दौरान उन्होंने क्षेत्र की जनता से अपना समर्थन और आशीर्वाद बनाए रखने की अपील भी की। चुनचनगिरी मठ की भूमिका की सराहना चालुवरायस्वामी ने अपने संबोधन में आदिचुंननगिरी क्षेत्र और मठ की गतिविधियों का भी उल्लेख किया। उन्होंने निर्मलानंदनाथ स्वामीजी द्वारा मठ के संचालन की सराहना करते हुए क्षेत्र के विकास और धार्मिक संस्थाओं की सामाजिक भूमिका पर बात रखी। उन्होंने कहा कि भगवान की कृपा से उन्हें दोबारा मंत्री पद की जिम्मेदारी मिली है और वह सिंचाई सहित विभिन्न क्षेत्रों में सामने आ रही चुनौतियों के समाधान के लिए काम कर रहे हैं। गौरी-गणेश उत्सव पर बारिश की कामना मंत्री ने आगामी गौरी-गणेश उत्सव का उल्लेख करते हुए लोगों से अच्छी बारिश के लिए भगवान से प्रार्थना करने की अपील की। उन्होंने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में पर्याप्त वर्षा किसानों और राज्य की कृषि व्यवस्था के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। कार्यक्रम में कई गणमान्य लोग रहे मौजूद महागणपति मंदिर के उद्घाटन समारोह में परम पूज्य निर्मलानंदनाथ स्वामीजी सहित मंत्री बायरथी सुरेश, विधायक शरथ बचेगौड़ा, उदय, दर्शन पुष्टणैया, पुष्टस्वामी गौड़ा, विश्वनाथ, दिनेश गूलीगौड़ा, व्यवसायी स्टार चंद्र, वेंकटेश सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेलगावी, 14 सितंबर 2026। कर्नाटक के बेलगावी जिले के अथानी में स्वचालित ट्रैफिक निगरानी व्यवस्था से जुड़ी एक अनोखी घटना सामने आई है। यहां एक कार चालक को कथित तौर पर हेलमेट नहीं पहनने के आरोप में 500 रुपये का जुर्माना भेज दिया गया। मामले में वाहन चालक ने दावा किया कि वह चार पहिया वाहन चला रहा था, जबकि एआई आधारित ट्रैफिक सिस्टम ने उसे दोपहिया वाहन से जुड़े नियम के उल्लंघन के रूप में दर्ज कर लिया। व्हाट्सएप अलर्ट आगामी गौरी-गणेश उत्सव का उल्लेख करते हुए लोगों से अच्छी बारिश के लिए भगवान से प्रार्थना करने की अपील की। उन्होंने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में पर्याप्त वर्षा किसानों और राज्य की कृषि व्यवस्था के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। कार्यक्रम में कई गणमान्य लोग रहे मौजूद महागणपति मंदिर के उद्घाटन समारोह में परम पूज्य निर्मलानंदनाथ स्वामीजी सहित मंत्री बायरथी सुरेश, विधायक शरथ बचेगौड़ा, उदय, दर्शन पुष्टणैया, पुष्टस्वामी गौड़ा, विश्वनाथ, दिनेश गूलीगौड़ा, व्यवसायी स्टार चंद्र, वेंकटेश सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

क्षेत्र की बताई जा रही है। अथानी निवासी सुभाष बोजाने को बेलगावी जिला ट्रैफिक पुलिस की ओर से व्हाट्सएप पर चालान संबंधी सूचना मिली। इसमें बिना हेलमेट वाहन चलाने के लिए 500 रुपये का जुर्माना लगाए जाने की जानकारी थी। बोजाने के अनुसार, वह उस समय कार चला रहे थे। ऐसे में कार चालक पर हेलमेट नहीं पहनने का चालान मिलने से वे हैरान रह गए। AI सिस्टम की पहचान पर उठे सवाल बताया गया कि एआई आधारित ट्रैफिक मॉनिटरिंग सिस्टम ने कथित तौर पर कार को दोपहिया वाहन के रूप में पहचान लिया। इसके बाद हेलमेट संबंधी यातायात नियम लागू करते हुए चालान जारी हो गया।

हालांकि, इस मामले में तकनीकी गड़बड़ी की आधिकारिक वजह और सिस्टम की पहचान प्रक्रिया को लेकर संबंधित विभाग की ओर से



विस्तृत स्पष्टीकरण सामने आना

टाटा न्यू हेवन में गणेश भक्ति की धूम

भारतार्थ खबर
अशोक कुमार सिंह
Bhaarataarth.com

मकाली, 14 सितंबर 2026। बेंगलुरु के हुस्कुर रोड, मकाली

विभिन्न आयु वर्ग के लोगों की भागीदारी देखने को मिली। परिवारों के साथ पहुंचे श्रद्धालुओं ने पूजा में हिस्सा लिया और भगवान गणेश के प्रति अपनी आस्था व्यक्त की।



स्थित टाटा न्यू हेवन रेजिडेंशियल सोसायटी में गणेश उत्सव श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। सोसायटी परिसर में भगवान गणेश की प्रतिमा की स्थापना के साथ पूजा स्थल को फूलों, रोशनी और आकर्षक सजावटी सामग्री से सजाया गया है। उत्सव के दौरान बड़ी संख्या में सोसायटी निवासी पूजा-अर्चना और गणेश दर्शन के लिए पहुंचे।

गणेश उत्सव के अवसर पर बच्चों, महिलाओं और पुरुषों सहित

इससे सोसायटी परिसर में धार्मिक उत्साह के साथ सामाजिक मेल-जोल का वातावरण भी बना रहा।

फूलों और रोशनी से सजा पूजा स्थल गणेश प्रतिमा के आसपास फूलों से विशेष सजावट की गई है। रंग-बिरंगी रोशनी, सजावटी पर्दों पूजा-अर्चना और गणेश दर्शन के लिए पहुंचे।

गणेश उत्सव के अवसर पर बच्चों, महिलाओं और पुरुषों सहित

गई है।

प्रदर्शनी में विभिन्न स्टॉल बने आकर्षण गणेश उत्सव के साथ सोसायटी परिसर में एक छोटी प्रदर्शनी भी आयोजित की गई है। इसमें विभिन्न प्रकार के सामान के स्टॉल लगाए गए हैं, जिन्हें देखने के लिए सोसायटी के निवासी और आगंतुक पहुंच रहे हैं।

प्रदर्शनी में ग्लोकल इलेक्ट्रॉनिक्स प्राइवेट लिमिटेड का इलेक्ट्रॉनिक्स स्टॉल भी शामिल है। यहां विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक एवं घरेलू उपकरण प्रदर्शित किए गए हैं। आयोजन में पहुंचे लोगों ने स्टॉल पर उपलब्ध उत्पादों को देखा और उनके संबंध में जानकारी प्राप्त की। बच्चों से लेकर बड़ों तक उत्साह गणेश उत्सव में बच्चों की भागीदारी विशेष रूप से दिखाई दी। परिवारों के साथ पहुंचे लोगों ने पूजा-अर्चना में हिस्सा लेने के साथ एक-दूसरे के साथ उत्सव की खुशियां साझा की। धार्मिक आयोजन ने सोसायटी के निवासियों को एक साथ आने और सामुदायिक सहभागिता का अवसर भी प्रदान किया।

टाटा न्यू हेवन सोसायटी में आयोजित गणेश उत्सव श्रद्धा, सजावट और सामुदायिक सहभागिता के कारण उत्सवी वातावरण का रूप लेता नजर आया। पूजा-अर्चना के साथ प्रदर्शनी में लगे स्टॉल भी लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं। गणपति बप्पा मोरया!

कल्पसूत्र में साधु समाचारी और पद्मावली का विवेचन

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 14 सितंबर 2026। बसवनगुडी। श्री जिन कुशल सूर्री जैन दादावाड़ी ट्रस्ट, बसवनगुडी में चतुर्मासार्थ विराजित पूज्य गुरुदेव श्री मलयप्रभ सागर जी म. सा. ने पर्युषण के सातवें दिन कल्पसूत्र के प्रवचन में साधु समाचारी और पद्मावली के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि कल्पसूत्र में जैन साधु-संघ की आशय परंपरा, अनुशासन तथा आचार्यों की गुरु-परंपरा का विवेचन मिलता है। उन्होंने बताया कि साधु समाचारी का आशय साधु-साधवियों के लिए निर्धारित आचार-विधि, मर्यादा और दैनिक व्यवहार की पद्धति से है। इसका उद्देश्य साधु जीवन को संयम, विनय, तप, स्वाध्याय और अहिंसा से परिपूर्ण रखते हुए संघ में अनुशासन एवं मर्यादा बनाए रखना है। प्रवचन में साधु समाचारी से जुड़े विभिन्न पक्षों पर चर्चा करते हुए गुरु एवं वरिष्ठ साधुओं के प्रति विनय, संघ की मर्यादा एवं अनुशासन, गोचरी और आहार की शुद्ध विधि, विहार की मर्यादा, प्रतिक्रमण एक-दूसरे के साथ उत्सव की खुशियां साझा की। धार्मिक आयोजन ने सोसायटी के निवासियों को एक साथ आने और सामुदायिक सहभागिता का अवसर भी प्रदान किया।

टाटा न्यू हेवन सोसायटी में आयोजित गणेश उत्सव श्रद्धा, सजावट और सामुदायिक सहभागिता के कारण उत्सवी वातावरण का रूप लेता नजर आया। पूजा-अर्चना के साथ प्रदर्शनी में लगे स्टॉल भी लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं। गणपति बप्पा मोरया!

गुरुदेव ने स्पष्ट किया कि साधु समाचारी साधु के जीवन-व्यवहार और संयम की दिशा बताती है, जबकि पद्मावली जिनशासन की गुरु-परंपरा और उसके क्रमिक विस्तार को समझने का माध्यम है। दोनों विषय जैन साधु-संघ की परंपरा एवं अनुशासन को समझने में महत्वपूर्ण माने जाते हैं। तीन तीर्थंकरों के चारित्र का वाचन साध्वी जी डॉ. प्रियश्रद्धाजना श्री जी म. सा. ने भगवान पार्ष्वनाथ, भगवान नेमिनाथ और भगवान आदिनाथ के चारित्र का वाचन करते हुए उनके जीवन एवं पूर्व भवों से जुड़े प्रसंगों का वर्णन किया। उनके प्रवचन से श्रद्धालुओं को तीर्थंकरों के जीवन संयम, त्याग और आध्यात्मिक साधना की प्रेरणा मिली। तपस्वियों का बहुमान प्रवचन के दौरान 11, 10, 9 और 8 उपवास की तपस्या करने वाले तपस्वियों का श्री जिन कुशल सूर्री जैन दादावाड़ी ट्रस्ट की ओर से बहुमान एवं अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर संघ की ओर से तपस्वियों के प्रति सम्मान और अनुमोदना व्यक्त की गई। बारसा सूत्र की भक्ति भावना के साथ जागरण परमात्मा महावीर की मूलवाणी बारसा सूत्र को लाभार्थी बाबूलाल एवं प्रकाश कुमार भन्साली परिवार के निवास स्थान पर चर्चुविधि संघ के साथ भक्ति एवं श्रद्धापूर्वक ले जाया गया।

